E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार के तृतीय अंक का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

इस अंक के प्रवेशक में राक्षस-राक्षसी के द्वारा जयद्रथ वध के दिन द्रुपद, मत्स्यसेन भूरिश्रवा, सोमदत्त, भगदत्त, वाह्लीक आदि राजाओं के वध की सूचना दी जाती है। तत्पश्चात् तलवार उठाये हुए अश्वत्थामा प्रवेश करता है। जब उसे यह मालूम होता है कि धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को उस समय मार डाला, जब युधिष्ठिर ने मिथ्या ही अश्वत्थामा के मरने के समाचार की घोषणा कर दी और उसे सुनकर द्रोणाचार्य ने शस्त्र छोड़ दिया था, तो वह क्रोध और शोक से विवश होकर रोने लगता है। उसके मामा कृपाचार्य उसे ढाढस बँधाता और दुर्योधन के पास ले जाकर उसे सेनापति बनाने के लिए अनुरोध करता है। दुर्योधन का निकटतम मित्र कर्ण था, जिसे वह सेनापति पहले ही बना चुका था। अभिमानी कर्ण अश्वत्थामा और द्रोण के सम्मान के विरुद्ध जब कुछ कहता है तो अश्वत्थामा और कर्ण में युद्ध की स्थिति आ जाती है। कृपाचार्य और दुर्योधन के बीच-बचाव करने से उन दोनों में युद्ध तो नहीं होता है, किन्तु अश्वत्थामा खिन्न होकर प्रतिज्ञा कर लेता है कि जब तक कर्ण है तब तक मैं युद्ध नहीं करूँगा।

इसी बीच नेपथ्य से भीम की गर्वोक्ति सुनाई देती है कि दुःशासन उसके भुजपञ्जर में आबद्ध हो गया है और वह उसका रक्तपान करने जा रहा है, यदि कोई कौरव रक्षा कर सके तो करे। यह सुनकर अश्वत्थामा कर्ण से कहता है कि अब जाकर राजबन्धु की रक्षा करो। तुम्हारी परीक्षा का यही अवसर है। कर्ण और दुर्योधन दुःशासन की रक्षा करने के लिए पहुँचते हैं, किन्तु अर्जुन उन दोनों पर एक साथ ही बाण बरसाने लगता है और भीम दुःशासन का रुधिर पी डालता है। उस समय दुःशासन की विपत्तिगत अवस्था को सुनकर अश्वत्थामा शस्त्र ग्रहण करना चाहता है, पर आकाशवाणी के द्वारा अश्वत्थामा को यह चेतावनी दी जाती है कि उसे अपनी प्रतिज्ञा को खण्डित नहीं करना चाहिए। अश्वत्थामा को इस बात का दुःख है कि वह दुःशासन की रक्षा नहीं कर पाता और देवता भी पाण्डवों के पक्षपाती हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi